

CPCRI ने नारयिल और कोको की खेती के लिये पेश की नई कस्मिं

[स्रोत: द हट्टि](#)

सेंटरल प्लांटेशन कर्पोस रसिर्च इंस्टीट्यूट (CPCRI) ने हाल ही में भारत में नारयिल और [कोको](#) की खेती में क्रांतिलाने के उद्देश्य से कोको की दो नई कस्मिं के साथ नारयिल की एक नई कस्मिं विकसित की है।

- कल्पा सुवर्णा, नारयिल की कस्मिं बड़े आकार के फल, उच्च जल सामग्री और तेल सामग्री जैसी विशिष्ट विशेषताओं के साथ नारयिल तथा खोपरा उत्पादन के लिये आदर्श है।
- कोको की कस्मिं VTL CH I और VTL CH II में वसा तथा पोषक तत्वों की मात्रा अधिक है, VTL CH II काली फली सड़न के प्रति सहनशील है।
 - काली फली सड़न एक कवक रोग है जो कोको के पेड़ों को प्रभावित करता है। यह मुख्य रूप से फाइटोथोरा वंश से संबंधित कवक प्रजातियों के कारण होता है।
- VTL CH I कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में उगाने के लिये उपयुक्त है जबकि VTL CH II कर्नाटक, केरल, गुजरात तथा तमिलनाडु में उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों के लिये अनुशंसित है।
 - कोको की दोनों कस्मिं से प्रतिवर्ष प्रतिपेड़ 1.5 किलोग्राम से 2.5 किलोग्राम सूखी फलियाँ प्राप्त होती हैं।
- CPCRI की स्थापना वर्ष 1916 में मद्रास सरकार द्वारा की गई थी और बाद में इसे वर्ष 1947 में भारतीय केंद्रीय नारयिल समिति में शामिल किया गया था।
 - वर्ष 1970 में, यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तहत राष्ट्रीय कृषि प्रणाली (National Agricultural System - NRS) का हिस्सा बन गया।
 - यह नारयिल, सुपारी, कोको, काजू और मसालों के लिये आनुवंशिक रूप से बेहतर रोपण सामग्री पर शोध और विकास पर केंद्रित है।